Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : **www.gisrrj.com**
OPEN ACCESS
© 2023 GISRRJ | Volume 6 | Issue 5 | ISSN : 2582-0095

भारतीय शिल्पकला का भारतीय अर्थव्यवस्था पर प्रभावः एक अध्ययन

कुमकुम मिश्रा
शोधार्थी (गृह विज्ञान) रानी आवंतीवाई लोधी राजकीय महिला महाविद्यालय, बरेली।
प्रो. (डॉ.) मनीषा राव
शोध निर्देशक,रानी आवंतीवाई लोधी राजकीय महिला महाविद्यालय, बरेली।

Article Info
Volume 6, Issue 5
Page Number : 41-45
Publication Issue :
September-October-2023
Article History
Accepted : 01 Sep 2023
Published : 12 Sep 2023

शोधसारांश– भारतीय शिल्प कला का भारतीय अर्थव्यवस्था पर आमूलचूक पड़ता है। भारत में तमाम पर्यटक आते हैं और भारत के विभिन्न प्रांतो की कला के नमूनों को याददाश्त के तौर पर अपने देश ले जाते हैं। इस प्रकार भारतीय शिल्प कला विदेश में खासतौर पर अमेरिका में बहुत प्रसिद्ध है। भारत की कुल आय का लगभग 1.8 प्रतिशत हिस्सा शिल्प कला के माध्यम से आता है। शिल्प कलाओं द्वारा भारत में लगभग 70 लाख से भी ऊपर लोग रोजगार में लगे हुए हैं।)

मुख्य शब्द : हस्तकला, शिल्पकला, कलाकृतियां, निर्यात, विदेशी मुद्रा आदि।

समसामयिक परिदृश्य में शिल्पकला– वर्तमान परिदृश्य में शिल्पकला का विकास एवं महत्व भी कम महत्वपूर्ण नहीं है। देश के सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन में विविधता ने उपयोगितावादी और सजावटी दोनों उद्देश्यों के लिए पूरे देश में विभिन्न प्रकार के शिल्प और कला–रूपों के विकास का मार्ग प्रशस्त किया है। प्रत्येक भारतीय राज्य की अपनी अनूठी परंपरा, डिजाइन, रंग, उपयोग में आने वाली सामग्री और व्यक्तिगत आकार और पैटर्न हैं, जो उस विशेष क्षेत्रा के हस्तशिल्प में प्रदर्शित होते हैं।

हस्तशिल्प का उत्पादन विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में महत्वपूर्ण आर्थिक गतिविधि के रूप में विकसित हुआ है। यह लाखों लोगों को रोजगार देकर देश के आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। हस्तशिल्प भारतीय अर्थव्यवस्था में सबसे महत्वपूर्ण क्षेत्रों में से एक है जिसमें सात मिलियन से अधिक लोग कार्यरत हैं। देश में लकड़ी के बर्तन, कला धातु के बर्तन, हस्तमुद्रित वस्त्रा, कढ़ाई के सामान, जरी के सामान, नकली आभूषण, मूर्तियां, मिट्टी के बर्तन, कांच के बर्तन, इत्रा, अगरबत्ती आदि का उत्पादन होता है। भारत में हस्तशिल्प उद्योग में महिला कारीगरों का वर्चस्व है, जिसमें कुल कारीगरों का 56 प्रतिशत से अधिक हिस्सा है। देश में 744 हस्तशिल्प क्लस्टर हैं जो लगभग 212,000 कारीगरों को रोजगार देते हैं और 35,000 से अधिक उत्पाद पेश करते हैं। सूरत, बरेली, वाराणसी, आगरा, हैदराबाद, लखनऊ, चेन्नई और मुंबई प्रमुख समूहों में से हैं। अधिकांश विनिर्माण इकाइयाँ ग्रामीण और छोटे शहरों में हैं, और सभी भारतीय

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

शहरों और विदेशों में बाजार की अपार संभावनाएँ हैं।

हथकरघा जनगणना 2019–20 के अनुसार, देश भर में लगभग 35,22,512 हथकरघा श्रमिक कार्यरत थे, जिनमें से 25,46,285 महिला श्रमिक थीं, जिनकी कुल हथकरघा श्रमिकों में हिस्सेदारी 72.29 प्रतिशत थी। इसके अलावा, विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) कार्यालय में लगभग 16,87,534 महिला हस्तशिल्प कारीगर पंजीकृत हैं। असंगठित क्षेत्रा में काम करने वाली महिलाओं की संख्या दर्शाने वाले आंकड़े। कपड़ा उद्योग के हथकरघा और हस्तशिल्प क्षेत्रा, राज्य–वार क्रमशः अनुबंध ᵖ और ᵖᵖ में हैं।

निवेश को आकर्षित करने, रोजगार सृजन को बढ़ावा देने और वैश्विक कपड़ा बाजार में खुद को मजबूती से स्थापित करने के उद्देश्य से, सरकार ने हाल ही में कपड़ा के लिए उत्पादन लिंक्ड प्रोत्साहन (पीएलआई) योजना और प्रधान मंत्री मेगा इंटीग्रेटेड टेक्सटाइल क्षेत्रा और परिधान (पीएम–मित्रा) योजना को मंजूरी दी है। इस क्षेत्रा में बड़े पैमाने पर रोजगार पैदा करने की क्षमता है। इसके अलावा, सरकार विभिन्न योजनाएं लागू कर रही है, जैसे संशोधित प्रौद्योगिकी उन्नयन निधि योजना (ए–टीयूएफएस), पावरलूम क्षेत्रा (पावर–टेक्स) के विकास के लिए योजनाएं, एकीकृत कपड़ा पार्कों के लिए योजना (एसआईटीपी), समर्थ–योजना। कपड़ा क्षेत्रा में क्षमता निर्माण, जूट (आईसीएआरई– बेहतर खेती और उन्नत रेटिंग अभ्यास), एकीकृत प्रसंस्करण विकास योजना (आईपीडीएस), रेशम समग्र, राष्ट्रीय हथकरघा विकास कार्यक्रम, राष्ट्रीय हस्तशिल्प विकास कार्यक्रम, एकीकृत ऊन विकास कार्यक्रम (आईडब्ल्यूडीपी), राष्ट्रीय तकनीकी कपड़ा अखिल भारतीय आधार पर कपड़ा क्षेत्रा के प्रचार और विकास के लिए मिशन आदि।

अनुबंध– I

चौथी अखिल भारतीय हथकरघा जनगणना 2019–20 के अनुसार महिला हथकरघा श्रमिकों की राज्य–वार संख्या इस प्रकार हैः–

क्र.स.	राज्य / केंद्र शासित प्रदेश	महिला हथकरघा श्रमिकों की संख्या
1	आंध्र प्रदेश	86,398
2	अरुणाचल प्रदेश	73,871
3	असम	11,79,507
4	बिहार	6,444
5	छत्तीसगढ	9,730
6	दिल्ली	2,219
7	गोवा	25
8	गुजरात	4,725
9	हरियाणा	14,078
10	हिमाचल प्रदेश	10,059
11	जम्मू और कश्मीर सहित लद्दाख	13,973
12	झारखंड	11,614

13	कर्नाटक	28,192
14	केरल	14,175
15	मध्य प्रदेश	9,269
16	महाराष्ट्र	1,266
17	मणिपुर	2,11,327
18	मेघालय	30,320
19	मिजोरम	22,083
20	नागालैंड	37,142
21	ओडिशा	57,640
22	पांडुचेरी	1,083
23	पंजाब	332
24	राजस्थान	6,244
25	सिक्किम	673
26	तमिलनाडु	1,26,549
27	तेलंगाना	23,245
28	त्रिपुरा	93,589
29	उत्तर प्रदेश	93,054
30	उत्तराखंड	8,595
31	पश्चिम बंगाल	3,68,864
कुल	अखिल भारतीय	25,46,285

अनुबंध– पप

विकास आयुक्त (हस्तशिल्प) कार्यालय में राज्यवार महिला हस्तशिल्प कारीगरों की पंजीकरण संख्या इस प्रकार है–

क्र.सं.	राज्य	कुल महिला कारीगर
1	अण्डमान और निकोबार	1,963
2	आंध्र प्रदेश	40,439
3	अरुणाचल प्रदेश	6,876
4	असम	58,114
5	बिहार	78,046
6	छत्तीसगढ	8,721
7	दिल्ली	11,820
8	गोवा	7,465
9	गुजरात	98,683
10	हरियाणा	23,112

11	हिमाचल प्रदेश	13,713
12	जम्मू और कश्मीर	60,458
13	झारखंड	51,694
14	कर्नाटक	16,493
15	केरल	33,181
16	लद्दाख	245
17	मध्य प्रदेश	57,209
18	महाराष्ट्र	35,149
19	मणिपुर	55,609
20	मेघालय	2,364
21	मिजोरम	1,187
22	नागालैंड	5,051
23	ओडिशा	78,890
24	पांडुचेरी	4,925
25	पंजाब	25,775
26	राजस्थान	79,884
27	सिक्किम	1,285
28	तमिलनाडु	46,995
29	तेलंगाना	19,721
30	त्रिपुरा	9,902
31	उत्तर प्रदेश	5,53,895
32	उत्तराखंड	30,326
33	पश्चिम बंगाल	1,68,344
कुल		16,87,534

नवीनतम हस्तशिल्प सर्वेक्षण (एनसीएईआर) से पता चला है कि लगभग 76.3 प्रतिशत इकाइयाँ ग्रामीण क्षेत्राों में केंद्रित हैं और कुल कारीगरों का लगभग 75.3 प्रतिशत इन्हीं ग्रामीण इकाइयों में काम करते हैं। 23.7 प्रतिशत इकाइयाँ शहरी क्षेत्रा में संचालित होती हैं जो कुल कारीगरों में से 24.7 प्रतिशत को रोजगार प्रदान करती हैं।

देश के कुल कारीगरों में आधे से अधिक प्रतिशत महिलाएं हैं। भारत में शिल्प क्षेत्रा के अवलोकन से पता चलता है कि यह क्षेत्रा देश के लिए विशेष रूप से विकास के आयाम से बहुत महत्वपूर्ण है।

विभिन्न ऑनलाइन पोर्टलों पर हस्तशिल्प उत्पादों की उपलब्धता में महत्वपूर्ण प्रगति भारत में बाजार की वृद्धि को बढ़ावा दे रही है। जैसे—जैसे देश का यात्राा और पर्यटन उद्योग बढ़ रहा है, हस्तशिल्प तेजी से लोकप्रिय हो रहा है। पर्यटक स्मृति चिन्हों और अन्य शिल्प वस्तुओं पर महत्वपूर्ण पैसा खर्च करते हैं, जिससे स्थानीय कारीगरों और शिल्पकारों के लिए कुशल हस्तशिल्प बनाने और बेचने के अवसर का विस्तार होता है। इसके

अलावा, घरों, कार्यालयों और रेस्तरां में हस्तनिर्मित सजावट के सामान की बढ़ती मांग और उपहार उद्योग की बढ़ती मांग बाजार के विकास को गति दे रही है। यह क्षेत्रा कम पूंजी निवेश, उच्च मूल्यवर्धन अनुपात और उच्च निर्यात क्षमता के साथ आर्थिक रूप से व्यवहार्य है।

हस्तशिल्प निर्यात– एक सिंहावलोकन

1990 तक भारत से हस्तशिल्प का निर्यात आकार में बहुत छोटा था, 1985 में 386.57 करोड़ रुपये और 1990 तक 712.99 करोड़ रुपये था। हालाँकि, 1990 के दशक की उदारीकरण नीतियों ने निर्यात प्रक्रियाओं और कई बाजार खिलाड़ियों की आमद को आसान बना दिया है। इससे भारतीय हस्तशिल्प वस्तुओं की वैश्विक मांग में तेज वृद्धि हुई। इस प्रकार, 1995 तक निर्यात बढ़कर 3207 करोड़ रुपये हो गया, निर्यात में चार गुना वृद्धि हुई, और उस दशक के अंत तक यह बढ़कर 8490 करोड़ रुपये हो गया, जिससे हस्तशिल्प देश के प्रमुख निर्यात माल में से एक बन गया।

भारत से हस्तशिल्प का निर्यात 2006–07 में 17288 करोड़ रुपये (भारत सरकार, 2010) के दशक की उच्चतम वृद्धि पर पहुंच गया, लेकिन वर्ष 2008–09 में निर्यात में गिरावट देखी गई। बाद के वर्षों में हस्तशिल्प निर्यात में फिर से तेजी आई और 2013–14 के आंकड़ों के अनुसार निर्यात 23,504 करोड़ रुपये के उच्चतम स्तर को छू गया।

यह लिबल और रॉय (2004) के तर्क को साबित और उचित ठहराता है कि ''... किसी भी पूर्वधारणा को कि बाजार–संचालित निवेश आवंटन के तहत शिल्प को आधुनिक विनिर्माण द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा, को त्याग दिया जाना चाहिए। इसके विपरीत मुक्त बाजार के शासन में शिल्पकला में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।" उन्होंने शिल्प निर्यात की सफलता के तीन प्रमुख कारण बताए। (प) पर्यटन बाजार के विस्तार के परिणामस्वरूप जातीय–विशिष्ट वस्तुओं की मांग, (पप) घरेलू साज–सज्जा पर खर्च के वैश्विक रुझान में वृद्धि; और (पपप) सिंथेटिक सामग्रियों पर आधारित वस्तुओं के स्थान पर पर्यावरण–अनुकूल प्राकृतिक सामग्रियों पर आधारित वस्तुओं को रखने की प्राथमिकता बढ़ रही है।

हालाँकि, वैश्विक हस्तशिल्प बाजार में भारतीय शिल्प का हिस्सा केवल लगभग 1.45 प्रतिशत है। और चीन और थाईलैंड जैसे अन्य एशियाई देशों से तीव्र प्रतिस्पर्धा के कारण हस्तशिल्प के वैश्विक बाजार में भारतीय हस्तशिल्प के भविष्य को लेकर अर्थशास्त्रियों के बीच चिंता बढ़ रही है, जो अब बाजार पर हावी हैं।

यहां यह बताना जरूरी है कि चीन और थाईलैंड में फैक्ट्री उन्मुख अनुबंध उत्पादन अधिक है। लेकिन भारतीय हस्तशिल्प अभी भी पारंपरिक तकनीकों और उत्पाद श्रृंखला के साथ कुटीर उत्पादन आधार में हैं। हस्तशिल्प में विश्व व्यापार मूल रूप से 'संस्कृति' में व्यापार नहीं है बल्कि आम लोगों की जरूरतों और स्वाद में व्यापार है। जिन वस्तुओं का थोक में उत्पादन करना होता है, हालाँकि वे हाथ से बनाई जाती हैं, उन्हें प्रसंस्करण और परिष्करण के लिए यांत्रिक सहायता की आवश्यकता होती है। इन वस्तुओं को कभी–कभी आकार, रंग और डिजाइन में बनाने की आवश्यकता होती है, जो निर्यातक देशों में पारंपरिक रूप से अपनाए जाने वाले विशिष्ट नहीं हैं। निर्यात बाजार पर कब्जा करने वाले देश वे हैं जिन्होंने अपनी कारीगरी और प्रौद्योगिकी को इन आवश्यकताओं के अनुरूप ढाल लिया है। एक नियम के रूप में, भारतीय कलाकृतियाँ मुख्यतः हस्तशिल्प हैं। दूसरी ओर, हस्तनिर्मित, आंशिक रूप से हस्तनिर्मित और साथ ही मशीन से तैयार किए गए सामानों का एक बड़ा वर्ग वैश्विक बाजार में उपहार और सजावटी के सामान्य नामकरण के साथ आता है। ऐसी स्थिति में, निर्यात बाजार की अंधी खोज से अत्यधिक प्रतिभाशाली शिल्प कौशल के खोने का खतरा है। थोक ऑर्डर से निपटने के लिए मशीनीकरण जातीय शिल्प की अनूठी गुणवत्ता को खतरे में डाल

सकता है (भारत सरकार, 2009)

निर्यात गंतव्य

अपनी वैयक्तिकता और अत्यधिक सुंदरता के कारण विदेशी बाजारों में भारतीय हस्तशिल्प उत्पादों की मांग लगातार बढ़ रही है। भारत के लिए प्रमुख हस्तशिल्प निर्यात गंतव्य संयुक्त राज्य अमेरिका, ब्रिटेन, स्|ह ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, फ्रांस, जर्मनी, इटली, जापान, नीदरलैंड, संयुक्त अरब अमीरात और स्विट्जरलैंड हैं। 2020–21 के दौरान कुल निर्यात में 38 प्रतिशत हिस्सेदारी के साथ यूएसए भारतीय हस्तशिल्प का शीर्ष आयातक है। भारत दुनिया भर के 70 से अधिक देशों में कालीन निर्यात करता है, मुख्य रूप से संयुक्त राज्य अमेरिका, ऑस्ट्रेलिया और यूरोप को। भारत के लिए सबसे बड़े कालीन निर्यात गंतव्य संयुक्त राज्य अमेरिका, जर्मनी, यूके और ऑस्ट्रेलिया हैं जिनकी हिस्सेदारी क्रमशः 57 प्रतिशत, 6 प्रतिशत, 5 प्रतिशत और 5 प्रतिशत है।

संयुक्त राज्य अमेरिका हस्तमुद्रित वस्त्रों, जरी की लकड़ियों, कढ़ाई वाले सामान, नकली आभूषण और शॉल का एक महत्वपूर्ण खरीदार है। 2021–22 में यूएसए को कालीन निर्यात 1.2 बिलियन अमेरिकी डॉलर से अधिक रहा, जबकि अप्रैल 2022–जनवरी 2023 के दौरान यह 896 मिलियन अमेरिकी डॉलर रहा। यूके भारतीय हस्तशिल्प का मुख्य ग्राहक है, जो कला वस्तुएं, क्रोकेटेड वस्तुएं, हस्तनिर्मित हस्तशिल्प, लकड़ी के सामान और नकली आभूषण खरीदता है। यह देश भारतीय हस्तनिर्मित कालीनों का एक प्रमुख आयातक भी रहा है। संयुक्त अरब अमीरात हस्तमुद्रित वस्त्रों, कढ़ाई के सामान और कला धातु के बर्तनों के प्रमुख खरीदारों में से एक है। हाथ से मुद्रित वस्त्रा, नकली आभूषण, कढ़ाई की वस्तुएं और कला धातुएं जर्मनी में लोकप्रिय खरीदारी हैं और देश ने 2021–22 में 116.64 मिलियन अमेरिकी डॉलर और अप्रैल 2022–जनवरी 2023 के दौरान 80.59 अमेरिकी डॉलर मूल्य के कालीन खरीदे।

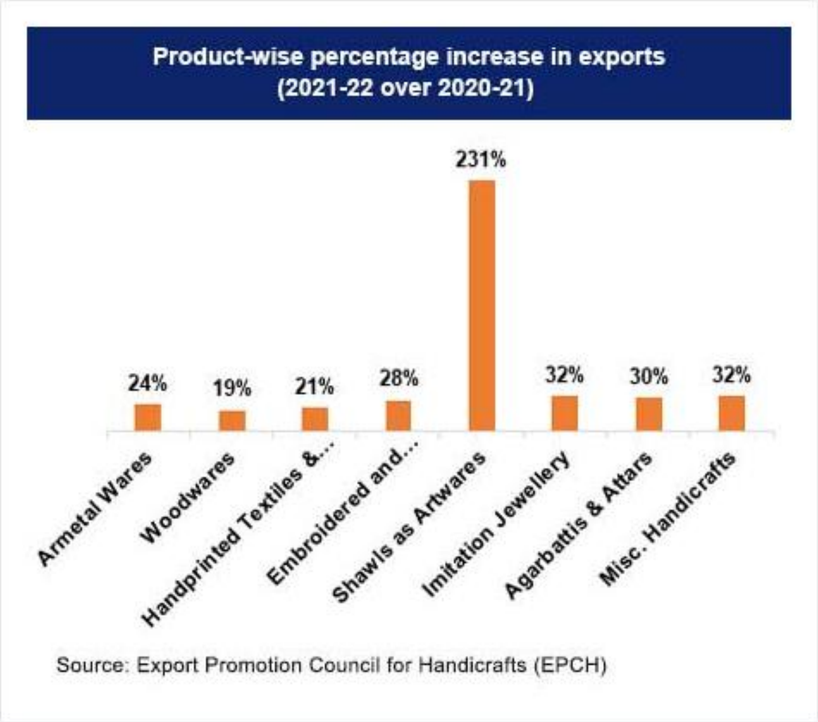

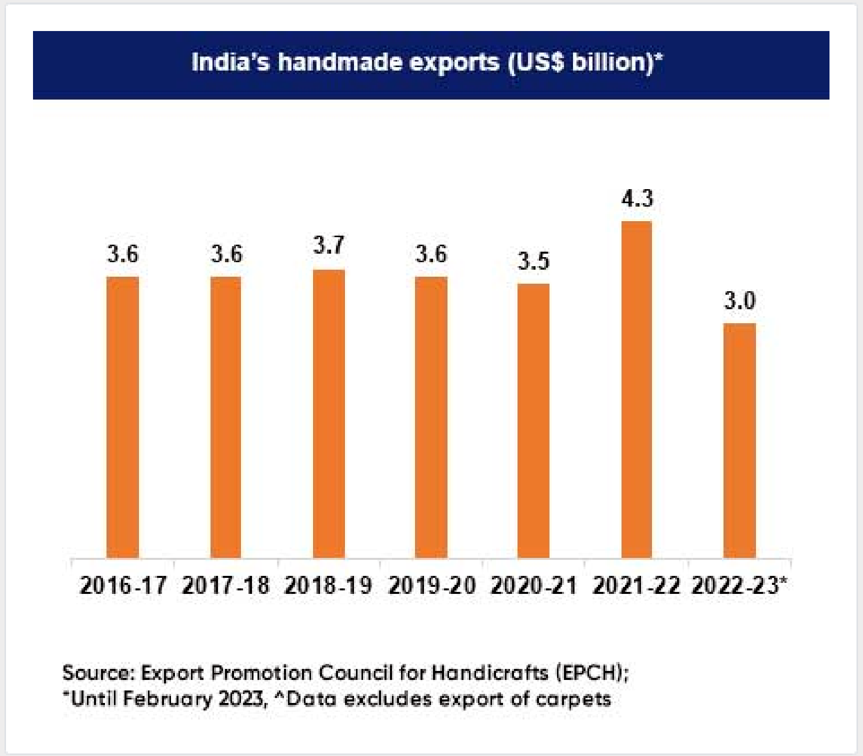

भारत सबसे बड़े हस्तशिल्प निर्यातक देशों में से एक है। अप्रैल 2022–फरवरी 2023 के दौरान हस्तशिल्प का कुल निर्यात 3 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा। 2021–22 में, भारतीय हस्तशिल्प का कुल निर्यात 4.35 बिलियन अमेरिकी डॉलर था, जो पिछले वर्ष से 25.7 प्रतिशत अधिक है। पिछले तीन वर्षों में, हस्तनिर्मित वस्तुओं, विशेषकर कालीनों का निर्यात लगातार बढ़ा है। हस्तनिर्मित कालीनों के वैश्विक निर्यात में भारत की

हिस्सेदारी लगभग 40 प्रतिशत है। 2020 में भारत से कालीन निर्यात कुल 1.37 बिलियन अमेरिकी डॉलर था। अप्रैल 2020–फरवरी 2021 के बीच कुल कालीन निर्यात 1.33 बिलियन अमेरिकी डॉलर रहा। भारत द्वारा निर्यात किए जाने वाले प्रमुख सामान हैं हस्तनिर्मित ऊन, लकड़ी के बर्तन, कढ़ाई और क्रोकेटेड सामान, कला धातु के बर्तन, हाथ से मुद्रित कपड़ा और स्कार्फ, अगरबत्ती और इत्रा, जरी और जरी के सामान और नकली आभूषण। अप्रैल 2022–फरवरी 2023 तक विभिन्न क्षेत्राों का हस्तशिल्प निर्यात इस प्रकार रहा, लकड़ी के बर्तन 800.4 मिलियन अमेरिकी डॉलर, कढ़ाई और क्रोकेटेड सामान 369.6 मिलियन अमेरिकी डॉलर, कला धातु के सामान 394.22 मिलियन अमेरिकी डॉलर, हस्तमुद्रित वस्त्रा और स्कार्फ 296.96 मिलियन अमेरिकी डॉलर, नकली आभूषण 149.89 मिलियन अमेरिकी डॉलर, विविध हस्तशिल्प 865.24 मिलियन अमेरिकी डॉलर।

पर्यटन आकर्षण के रूप में शिल्प– बाजार उदारीकरण की पहल का एक प्रत्यक्ष प्रभाव, जिसने 1980 और 1990 के दशक के दौरान न केवल भारत बल्कि लगभग पूरी दुनिया को प्रभावित किया, वह था पर्यटन का विकास। इस अवधि के दौरान पर्यटन प्रमुख आर्थिक गतिविधियों में से एक बन गया है जो सकल घरेलू उत्पाद, निवेश और रोजगार में योगदान देता है। यूएनडब्ल्यूटीओ की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार, दुनिया भर में अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों का आगमन लगभग 1858 मिलियन तक पहुंच गया है और पर्यटन से प्राप्त आय लगभग 2,130 मिलियन अमेरिकी डॉलर है, जो इसे विश्व अर्थव्यवस्था में सबसे बड़ा योगदानकर्ता बनाती है। विकसित देशों ने पर्यटन विकास को मौजूदा आर्थिक संरचना पर एक अतिरिक्त लाभ के रूप में पाया। इस क्षेत्रा को आर्थिक रूप से कमजोर देशों द्वारा अपनी स्थानीय अर्थव्यवस्था को वैश्विक आर्थिक प्रणाली से जोड़ने के अवसर के रूप में देखा गया था।

पर्यटन के विकास ने दुनिया भर में शिल्प क्षेत्रा के लिए एक नई बाजार संभावना खोल दी है। शिल्प और पारंपरिक कलाकृतियाँ समकालीन पर्यटकों के लिए जिज्ञासा की वस्तु हैं। पर्यटन खरीदारी में लगातार बढ़ते रुझान ने लगभग सभी पर्यटन स्थलों में हस्तशिल्प की मांग पैदा कर दी है। पर्यटन में शिल्प उपभोग का प्राथमिक साधन स्मृति चिन्ह के रूप में है। ऐसा इसलिए है क्योंकि शिल्प किसी विशिष्ट गंतव्य की पारंपरिक संस्कृति और सामाजिक जीवन को दर्शाता हैय इसे स्थान का चिह्न बनाना। पर्यटकों के लिए, जो किसी विशेष स्थान का दौरा करते हैं, शिल्प और कलाकृतियाँ प्रामाणिक रूप की वस्तुएँ बन जाती हैं जिन्हें उनकी यात्राा की स्मृति के रूप में वापस ले जाया जा सकता है।

भारत के प्रमुख पर्यटन केंद्रों में पर्यटकों की खरीदारी में हस्तशिल्प की उल्लेखनीय भूमिका है। हालाँकि, भारतीय पर्यटन बाजार में शिल्प खपत के आर्थिक आकार को सत्यापित करने के लिए कोई आधिकारिक डेटा नहीं है। यदि हम अंतर्राष्ट्रीय प्रवृत्ति का अनुसरण करें, तो पर्यटन व्यय का लगभग 30 प्रतिशत पर्यटकों द्वारा खुदरा बिक्री पर खर्च किया जाता है, जिसका एक बड़ा हिस्सा निश्चित रूप से शिल्प खरीद पर खर्च किया जाता है। पर्यटन मंत्राालय द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय यात्री सर्वेक्षण ने गणना की है कि कुल पर्यटन का लगभग 38 प्रतिशत भारतीय गंतव्यों में खरीदारी पर खर्च होता है और इसमें से लगभग 15 प्रतिशत खर्च हस्तशिल्प खरीद पर होता है।

पेस (2006) ने भारत में विदेशी पर्यटन के रोजगार संबंधी निहितार्थों की जांच करने का प्रयास किया। रोजगार गुणांक विधि का उपयोग करके, उन्होंने प्रति करोड़ रुपये के विदेशी पर्यटक खर्च से उत्पन्न रोजगार 466 पाया। अध्ययन ने आगे, क्षेत्रावार निहितार्थ की गणना की है। यह देखा गया है कि पर्यटन व्यय से हस्तशिल्प क्षेत्रा में 25 अतिरिक्त नौकरियाँ पैदा होती हैं, जबकि कपड़ा और संबद्ध क्षेत्रा (जिसमें

कालीन और अन्य कपड़ा शिल्प शामिल हैं) को भारत में प्रत्येक एक करोड़ पर्यटन खर्च के कारण 42 अतिरिक्त नौकरियाँ प्राप्त हुईं। भारत सरकार द्वारा दो सबसे महत्वपूर्ण पर्यटन राज्यों, केरल और राजस्थान में चयनित विरासत स्थलों पर आजीविका कमाने वाले कारीगरों और कलाकारों पर पर्यटन के सामाजिक–आर्थिक प्रभाव का आकलन करने के लिए किए गए एक अन्य सर्वेक्षण में यह पाया गया कि 60 प्रतिशत सर्वेक्षण किए गए कारीगरों और कलाकारों की कुल आय का योगदान पर्यटन से था। अध्ययन में अध्ययन क्षेत्रा में रहने वाले कारीगरों के जीवन में प्रमुख आर्थिक और सामाजिक सुधार देखा गया।

जबकि शिल्प–पर्यटन संपर्क का आर्थिक विश्लेषण अंतर–क्षेत्रीय जुड़ाव के लिए एक सकारात्मक दृष्टिकोण देता है, यह देखा गया है कि प्राप्तियों और उसके प्रभाव की गणना करते समय आयात सामग्री के कारण क्षेत्रा के आर्थिक रिसाव पर विचार नहीं किया जाता है। पर्यटन प्रेरित प्राप्ति या रोजगार सृजन की गणना करते समय, इसके उप क्षेत्रों में आयात सामग्री को ध्यान में रखना होगा। कई उप क्षेत्रों (आतिथ्य, यात्राा आदि) में आयात की मात्राा बहुत अधिक है और इसलिए यह नहीं माना जा सकता कि पूरी प्राप्ति स्थानीय अर्थव्यवस्था तक पहुंच जाएगी। इसके बावजूद, हस्तशिल्प क्षेत्रा में पर्यटन के महत्व को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है क्योंकि पर्यटन में विदेशी पर्यटकों के साथ–साथ शहरी आबादी में उच्च वर्ग की आबादी के बीच रुचि पैदा करने की क्षमता है, जिससे अंततः भारत विशिष्ट जातीय शिल्प और वैश्विक स्तर पर कलाकृतियाँ की मांग बढ़ सकती है।

इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि भारतीय हस्तशिल्प क्षेत्रा पहले ही निर्यात बाजार में जा चुका है, पर्यटन के माध्यम से शिल्प को बढ़ावा देना शिल्प क्षेत्रा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस संदर्भ में यह ध्यान रखना उचित होगा कि भारतीय हस्तशिल्प के सबसे बड़े निर्यात बाजार भारत के लिए अंतरराष्ट्रीय पर्यटकों का प्रमुख स्रोत भी हैं। यह केवल इस तथ्य को उजागर करने के लिए है कि पर्यटन विकास संभावित रूप से भारतीय हस्तशिल्प को बढ़ावा देने के साधन के रूप में कार्य कर सकता है।

भारत सरकार ने देश की सांस्कृतिक विरासत पर ध्यान केंद्रित करते हुए कई पर्यटन कार्यक्रम शुरू किए हैं जो अंततः पर्यटन से शिल्प की मांग को बढ़ा सकते हैं। भारत सरकार 127 ग्रामीण स्थलों को पर्यटन स्थलों के रूप में विकसित कर रही है, जिसमें यूनेस्को द्वारा वित्त पोषित अंतर्जात पर्यटन परियोजनाओं के तहत 31 ग्रामीण/विरासत पर्यटन परियोजनाएं शामिल हैं। ये स्थल स्थानीय संस्कृति, व्यंजन, विरासत, कला और शिल्प का प्रदर्शन करेंगे। इसका उद्देश्य कम आय वाले ग्रामीण समुदायों के लिए नए और अभिनव आजीविका के अवसर खोलने के लिए आतिथ्य व्यापार का उपयोग करना है। चयनित अधिकांश स्थल जैसे गुजरात में होदका, केरल में अरनमुला, उड़ीसा में पिपली आदि हस्तशिल्प उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं और परियोजनाओं में शिल्प के लिए पर्यटकों की मांग को पूरा करने का प्रयास किया गया है।

निष्कर्ष– इस प्रकार हमने देखा कि अमेरिका भारत के शिल्प बाजार का सबसे बड़ा उपभोक्ता है। साथ ही देश में पर्यटन को जितना ज्यादा प्रोत्साहन दिया जाएगा भारत का हस्तशिल्प बाजार भी उतना ही फले–फूलेगा। हस्तशिल्प उद्योग एवं कारीगरों पर देश को काफी ध्यान देने की आवश्यकता है ताकि देश में हस्तशिल्प उद्योग का संमुचित विकास हो, जिससे देश की विदेशी मुद्रा में बढ़ोतरी हो। क्योंकि जैसे–जैसे हस्तशील बाजार का विकास होगा इसका निर्यात तेज होगा और जिससे देश को विदेशी मुद्रा की प्राप्ति होगी।

संदर्भ

1. Sandhya Rani and Das, Socio-Economic Profile of Handloom Weaving Community: A Case Study of Bargarh District, Odisha, Disseveration, National Institute Of Technology, Rourkela, Sundargarh - 769008, Odisha, India, 2015.
2. Azad Basha, "Problems and Prospects of Small and Medium Enterprise in India", Shanlax International Journal of Commerce, Vol.1, No.4, October 2013.
3. Mondal, A. Design approach to enhance manufacturing efficiency of the handloom sector in Northeast Zone. Lecture presented at Indian Handloom Textiles in the Context of Globalization|| - National Seminar (2015, June).
4. Muhammad Amjad Bashir, Muhammad Irfan and Muhammad Farhat Hayyat, "Role of Handlooms in the Socio-Economic Conditions of Handlooms Workers in Cholistan", Applied Sciences and Business Economics, Vol.1, Issue.4, 2014., PP.124-129.
5. Singh, D.P, *Women Workers in Unorganized Sector,* (Deep and Deep Publications (p) Ltd., New Delhi, 2015).
6. Yogima Seth Sharma, "Despite Policy support, Labour Participation by Women still Low", The Economic Times, March 08, 2022.
7. Available at: https://www.epi.org/publication/irregular-work-scheduling-and-its-consequences/ (Visited on April 12, 2018).
8. Pais Jesim (2006) Tourism employment : An analysis of foreign tourism in India, Working paper 2006/04,New Delhi, Institute of social and industrial development.
9. Liebl, Maureen & Tirthankar Roy (2004) Handmade in India, Economic and Political Weekly,Vol, 38 (51,52): 5366-76